दुःख

यशपाल

सारांशः-

दिलीप और हेमा पति-पत्नी थे। दोनों प्यार करने है। दिलीप पत्नी को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी। एक दिन उस की सहेली के साथ सिनेमा देखने के कारण पति से रूठकर हेमा अपने घर चले जाते है। दिलीप को बडा दुःख और क्षोभ हुआ।

एकांतता से बचने केलिए वह शाम को टहलने जाता है। इधर-उधर घूमते फिरते रात में घर लौटते समय आजीविका केलिए सौदा बचनेवाले एक लड़के से उसकी मुलाकात हुई। उसकी दयनीयता समझकर दिलीप सारे पकौड़े खरीदकर आठ पैसे देते है। छुट्टे के पैसे लेने के बहाने दिलीप उसके घर जाता है। वहाँ की स्थिति दयनीय था।

उसकी विधवा माँ के पास भी छुट्टे के पैसे नहीं थे। बालक को मिठाई केलिए बाकी पैसे दिया तो ईमानदारी माँ उसके लिए तैयार नहीं हुआ। वह अपना भूख भूलकर बेटे के पेट भराना चाहते हैं। माँ-बेटे के इस असली भूख देखकर दिलीप का मन द्रवित होता है।

रात में घर पहुँचते ही दिलीप को पत्नी का पत्र मिलता है। पत्र इस प्रकार शुरु होती है- **'**मैं इस जीवन में दुख ही देखने में पैदा हुई हुँ।**'** आगे पढ़े बिना उसने पत्र फाँडकर फेंकता है। वह उस गरीब माँ-बेटे के यथार्थ दुख और अपनी पत्नी के नकली दुख की तुलना करते हैं। दिलीप पहचानते है, हेमा की दुख रसीला है और कहते है कि **'**काश! तुम जानती कि दुख किसे कहता है।**'** दिलीप असली दुख का पहचान करते है।

कहानी पढ़ें और उत्तर लिखें।

(1) दिलीप क्यों व्याकुल था?

दिलीप ने अपनी पत्नी हेमा को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी। वह हेमा को दिल से बहुत अधिक चाहता था कि, बहुत सारे लोग उसे **'**अति**'** कहेंगे। फिर भी हेमा संतुष्ट न थी। एक दिन दिलीप उसकी सहेली के साथ सिनेमा देख आने के कारण रात भर रूठी रहकर सबेरे उठते ही माँ के घर चली गई। इससे दिलीप को गहरी चोट लगी। वह बहुत दुःखी हुआ।

(2) मन वितृष्णा से भर जाता है. कब?

जिसे मनुष्य सर्वापेक्षा अपना समझ भरोसा रखता है, तब उसीसे अपमान और तिरस्कार होते समय मन वितृषा से भर जाता है।

(3) दिलीप के मन में क्षोभ का अंत न रहा, क्यों?

दिलीप के, उसकी सहेली के साथ सिनेमा देख जाने के कारण, रात भर रूठी रह कर सुबह उठते ही अपने माँ के घर चली गई, तब दिलीप के मन में क्षोभ का अंत न रहा।

(4) हेमा क्यों अपनी माँ के घर चली गई?

दिलीप के, उसकी सहेली के साथ सिनेमा देख आने के कारण हेमा अपने माँ के घर चली गई।

(5) एक-एक मिनिट गुज़रना मुश्किल हो जाता है। किसको? क्यों?

दिलीप को। अपनी पत्नी हेमा के मायके चले जाने के बाद वितृष्णा और ग्लानी में समय स्वयं यातना बन गया। उसको एक-एक मिनिट गुज़रना मुश्किल हो गया।

(6) दिलीप कैसे मिंटो पार्क पहुँचा?

लोगों की निगाहों से छिपाकर गली के कीचड़ से बचता हुआ, मारी दरवाज़े से होकर शहर की पुरानी फसील के बाग से होता हुआ दिलीप मिंटो पार्क पहुँचा।

(7) दिलीप की व्याकुलता कब कम हुई?

मिंटो पार्क की एकांतता में सिर से टोपी उतार कर बैठते समय ठंड हवा लगाकर उसकी मस्तिष्क की व्याकुलता कुछ कम हुई।

(8) पार्क की एकांतता में बैठकर दिलीप क्या-क्या सोचने लगा?

पार्क की एकांतता में बैठकर वह सोचने लगा, यदि ठंड़ लग जाने से बीमार हो जाए तो वह अपने दुख को अकेला की सहेगा। अपने दुख का भाग लेने केलिए किसी को न बुलाएगा। अपनी मृत्यु के बाद घर में जो लोग बैठेंगे, उनमें हेमा भी होंगी। उसके अभाव में हेमा अपने व्यवहार केलिए पछताएगी।

(9) दिलीप के चुपचाप सहते जाने का बदला क्या होगा?

ठंड लग जाने से यदि बीमार होकर वह उसकी मृत्यु हो जाएगी तो हेमा उसके अभाव में अपने व्यवहार केलिए पछताएगी। यही बदला होगा दिलीप के चुपचाप सहते जाने का।

(10) वह करवट बदल ठंड़ी हवा खाने केलिए बैठ गया। क्यों?

ठंड़ी हवा सीधे खाकर जल्दी हालत खराब होने की आशा में वह करवट बदल बैठ गया।

(11) स्वयं सह अन्याय के प्रतिकार की एक संभावना देख उसका मन कुछ हल्का हो गया था। किसका मन? प्रतिकार की संभावना क्या थी?

दिलीप का मन।

अपनी पत्नी हेमा घर छोडकर जाने पर दिलीप का मन वितृष्णा और यातना से भर आया। एक-एक मिनट काटना मुश्किल हो जाता है और शाम को टहलने जाता है। बाहर की ठंडी हवा लगाने से उसकी व्याकुलता कुछ कम हुई। ठंड लगने से उसके मन में बीमारी होकर जल्दी अपनी मृत्यु हो जाने का विचार आया। उसी दिन हेमा ज़रूर उसके नुकसान और अपने व्यवहार केलिए पछताएगी। अन्य लोगों के साथ बैठकर हेमा भी फूट-फूटकर रोएगी। ऐसा सोचकर उसने संतोष की एक दीर्घ निश्वास लिया और उसका मन कुछ हल्का सा हो गया।

(12) 'वह लौटने केलिए उठा। मार्ग में कोई व्यक्ति नहीं थे।' उस रात में दिलीप ने क्या-क्या देखा? अपने शब्दों में वर्णन करें।

सड़क के किनारे बिजली के लैंप निर्विकार भाव से अपना प्रकाश सड़क पर डाल रहे थे। इन लैपों के चारों ओर लाखों पतंगें गोले बाँध-बाँध कर नृत्य कर रहे थे। वृक्षों के भीगे पत्ते बिजली में चमचमा रहे थे।

(13) सौर जगत् के वह अद्भुत नमूने थे। क्या?

वहाँ लाखों पतंगे गोले बाँध-बाँध कर बिजली के लैंपों के चारों ओर नृत्य कर रहे थे। प्रत्येक पतंगा एक नक्षत्र की भाँति अपने मार्ग पर चक्कर काट रहा था। कोई छोटा, कोई बड़ा दायरा बना रहा है। वे सब विपरीत गति में चक्कर काटते चले रहे थे, लेकिन कोई किसीसे टकराता नहीं। वह दृश्य वास्तव में सौर मंडल में सूर्य के चारों ओर चक्कर काटने वाली गृहों के समान है।

HSSLiVE.IN

(14) 'मनुष्य के बिना भी संसार कितना व्यस्त और रोचक हैं!' क्यों?

एकाकी दिलीप बारिश थम जाने पर साइकिल लेकर बाहर निकला। चलते-चलते वह मिंटो पार्क पहुँचा। वहाँ की ठंडी हवा में ज़रा बैठने में उसका मन कुछ हल्का हो गया था। वह लौटने केलिए उठा। साढे नौ बज गए थे। सड़क सुनसान था। मार्ग में कोई व्यक्ति दिखाई न दिया। सड़क के किनारे खडे बिजली के लैंप अपना प्रकाश सड़क पर डाल रहे थे। उस प्रकाश में लाखों पतंगें गोले बाँध-बाँध कर नृत्य कर रहे थे। प्रत्येक पतंग एक नक्षत्र की भाँति अपने मार्ग पर चक्कर काट रहा था। कोई किसी से टकराता नहीं। वृक्षों के भीगे पत्ते उस प्रकाश में चमचमा रहे थे। लैंप के नीचे से आगे बढने पर उसकी छोटी परछाई आगे-पीछे चलती थी। मनुष्य के बिना इस संसार की सुंदरता देखकर दिलीप ने सोचा कि मनुष्य के बिना भी संसार कितना व्यस्त और रोचक है।

(15) सड़क के किनारे दिलीप ने क्या देखा?

सड़क के किनारे नींबू के पेड़ की छाया में दिलीप ने कोई श्वेत-सी चीज़ देखा। कुछ और आगे बढ़ने पर उसको मालुम हुआ वह एक छोटा लड़का था।

(16) छोटा लड़का क्या कर रहे थे?

छोटा लड़का सफेद कुर्ता-पायजामा पहनकर, एक थाली अपने सामने रखकर कुछ बेच रहा है।

(17) खोमचे बेचनेवाले छोटे लडके की हालत का वर्णन कैसे किया गया है?

साढे नौ बजे गली से घर लौटने पर दिलीप ने सडक के किनारे नींबू वृक्ष की छाया में एर छोटी-सी परछाई देखा। कुछ और बढ़ने पर उसको मालुम हुआ, वह एक छोटा लडका कुछ बेच रहा है। वह ठंडी हवा में सिकुडकर बैठा था। रात में सौदा बेचनेवाले उस सौदागर के पास मिट्टी के तेल की ढिबरी तक नहीं। उसके मुख पर खोमचे बेचनेवालों की-सी चतुरता की जगह एक कातरता थी। उसकी थाली भी खोमचे का थाल न होकर घरेलु व्यवहार की एक मामूली हल्की मुरादाबादी थाली थी। तराज़ू भी न था। पास की थाली में कागज़ के आठ टुकड़ों पर पकौडों को बराबर-बराबर ढेरियाँ लगाकर रख दी गई थी।

(18) इस ठंडी रात में हमीं दो व्यक्ति बाहर हैं। वे दो व्यक्ति कौन-कौन है?

दिलीप और खोमचेवाले लड़के।

(19) वह उसके पास ठिठक गया। कौन? किसके पास? क्यों?

दिलीप खोमचेवाले लड़के के पास ठिठक गया। उस ठंडी रात में सुनसान सड़क पर, जहाँ कोई आने-जानेवाला नहीं है, वहाँ एक खोमचे बेचनेवाले छोटे लड़के को देखकर दिलीप ठिठक गया, क्योंकि मनुष्यत्व वही चीज़ है जो कभी-कभी सारे भेद-भाव को लाँघ जाता है।

(20) दिलीप ने लड़के के पास क्या देखा?

दिलीप ने लड़के के पास एक थाली में कागज़ की आठ टुकड़ों पर पकौड़ों की ढ़ेरियाँ देखा।

(21) दिलीप को अपने पास देखा तो लड़के ने क्या कहा?

दिलीप को अपने पास देखा तो लड़के ने कहा - "एक-एक पैसे में एक-एक ढेरी।"

HSSLiVE.IN

(22) दिलीप ने क्या खरीद लिया?

दिलीप ने आठ पैसे केलिए सारे पकौड़े खरीद लिया।

(23) दिलीप क्यों सिहर उठा?

आठ पैसे का खोमचा बेचने केलिए इस सर्दी सुनसान सड़क पर बैठनेवाले उस छोटे लड़के के घर की अवस्था के बारे में सोचकर दिलीप सिहर उठा।

(24) आठ पैसे के बदले दिलीप क्यों बालक को एक रुपए दिया?

आठ पैसे के खोमचा बेचने केलिए सर्दी में बैठनेवाले उस छोटे लड़के के घर की अवस्था देखने का कौतूहल में दिलीप ने आठ पैसे के बदले एक रुपए दिया। बाकी पैसे लेने केलिए वह उसके घर जाना चाहा।

(25) लड़के के घर की हालत क्या थी?

लड़के के बाप मर गया है। माँ अढ़ाई रुपया महीना लेकर एक घर में काम करती थी। लेकिन अब उसे काम से हटा दिया है।

(26) लड़के के माँ को क्यों काम से हटा दिया?

लड़के के माँ अढ़ाई रुपया महीना लेकर वहाँ काम करती थी। लेकिन जगतू के माँ ने दो रुपए से सब काम करने केलिए तैयार हो गई तो उसे हटाकर जगतू के माँ को रख लिया।

(27) बाबू की घरवाली ने माँ को हटाकर जगतू की माँ को रख लिया है। यहाँ समाज की कौन-सी मनोवृत्ति प्रकट है?

उस छोटे लडके की माँ अढाई रुपया महीना लेती थी। जगतू की माँ दो रुपये से सब काम करने केलिए तैयार हो गई। इसलिए बाबू की घरवाली ने छोटे लडके की माँ को हटाकर जगतू की माँ को रख लिया है।

यहाँ अमीरों से गरीब लोगों के प्रति होनेवाले शोषण, निर्दयता और पैसे कमाने की व्यग्रता प्रकट होती है।

(28) जगतू के माँ क्या करती थी? वह क्यों उस काम छोड़कर आई?

जगतू के माँ स्कूल में लड़कियों को घर से बुला लाने का काम करती थी। स्कूलवोलों ने लड़कियों की घर से लाने केलिए मोटर रख ली तो उसका काम नष्ट हो गया।

(29) दिलीप ने झाँककर देखा। उस छोटे कमरे में उसने क्या-क्या देखा?

मुश्किल से आदमी के कद की ऊँचाई वाले शहरों में ईंधन रखने केलिए बनी जैसी एक कोठरी। वहाँ एक छोटी चारपाई दीवार के सहारे खड़ा थी। उसके पाये में दो-एक मैले कपड़े लटक रहे थे।

(30) लड़के की माँ कौन थी?

लड़के की माँ आधी उमर की क्षीणकाय स्त्री थी जो एक मैली-सी धोती से अपना शरीर लपेटे बैठी थी।

(31) एक बडी खिडकी के आकार का दरवाज़ा- के प्रयोग से कहानीकार क्या बताना चाहता है?

छोटे लडके की कुटिया छोटा है। एक बडी खिडकी के आकार का दरवाज़ा - इस प्रयोग से उस परिवार की गरीब दशा के बारे में बताना चाहता है।

(32) दिलीप को सुनाने की इच्छा से उस माँ ने क्या कहा?
दिलीप को सुनाने की इच्छा में उस माँ ने कहा - "बेटा, रूपया बाबू जी को लौटाकर घर का पता पूछ ले, पैसे कल ले आना।"

HSSLiVE.IN

(33) स्त्री नहीं-नहीं कर गई, क्यों?
दिलीप ने खोमचे केलिए आठ पैसे की वजह एक रुपया दिया। उसका घर देखने की इच्छा में वह बाकी लेने केलिए बच्चे के साथ गया। लेकिन उसके घर में भी छुट्टे पैसे नहीं थे। दिलीप उस बच्चे केलिए मिठाई खरीदने केलिए देना चाहा तो वह माँ किसी से मुफ्त के पैसे लेना नहीं चाहती था। इसलिए स्त्री नहीं-नहीं करती रह गई।

(34) उस माँ ने लड़के को खाने केलिए क्या दिया?
माँ ने लड़के को पीतल के एक बर्तन से नीचे से मैले अँगोछे में लिपटी दो रोटियाँ निकालकर, अपने बेटे का हाथ धुला कर खाने को दिया।

(35) रोटी देखकर बेटे ने क्यों मुँह बना कर इनकार किया?
उसके माँ के पास अब एक रुपए है। वह तो तुरंत की कमाई से पुलकित हो गई है। इसलिए वह रूखी रोटी देखकर मुँह बना कर इनकार किया।

(36) बच्चे क्यों रोटी ज़मीन पर डाल दी और ऐंठ गया?
बच्चा तुरंत की कमाई से पुलकित थी। खाने केलिए सुबह भी रूखी रोटी था। इसलिए वह रोटी ज़मीन पर डाल दी और ऐंठ गया।

(37) बेटा क्यों रीझ गया?
माँ ने उसे गोद में खींच लिया और कहा सुबह ज़रूर दाल खिलाऊँगी। उसने आगे कहा - "सुबह मैं तुझे खूब सौदा बना दूँगी, फिर तू रोज़ दाल खाना।" इसलिए वह खुशी में रीझ गया।

(38) "मुझे अभी भूख नहीं है।" माँ ने ऐसा क्यों कहा?
उस घर में खाने केलिए कुछ और चीज़ नहीं है। माँ अपनी घर की हालत से परिचित थी। इसलिए उसने अपने बेटे को पुचकारकर कहा मैं ने सुबह दे से खाई थी, अभी भूख नहीं है।

(39) दिलीप क्यों अपने दाँतों से होंठ दबा पीछे हट दिया?
उस घर में दो रूखी रोटी के अलावा खाने केलिए कुछ और चीज़ नहीं है। माँ भूखी थी, लेकिन अपने बेटे को खाने केलिए वह अपनी भूख भूल कर बेटे को खिलाने की कोशिश करते है। दिलीप को और देखने केलिए शक्ति नहीं है। इसलिए दाँतों से होंठ दबा कर वह पीछे हट गया।

(40) क्यों दिलीप ने अपने नौकर से कहा - "भूख नहीं है"?
घर पहुँचता तो नौकर आकर उसे खाने केलिए बुलाया। खाने के बारे में सुनते ही दिलीप को उस लड़के और माँ की याद आई।

(41) "मिट्टी की तेल की ढ़िबरी के प्रकाश में देखा वह दृश्य उसकी आँखों से हटना न चाहता था।" किसके आँखों से? दृश्य क्या है?
दिलीप के आँखों से। मिट्टी की तेल की ढ़िबरी के प्रकाश में उन्होंने खोमचेवाले लड़के के घर देखा। शहरों में ईंधन रखने केलिए बनी जैसी छोटा कमरा, वहाँ एक

छोटी चारपाई देखा, जो काली दीवार के सहारे खड़े थे। उसके एक पाये से दो-एक मैले कपड़े लटक रहे थे। एक क्षीणकाय, आधी उमर की स्त्री मैली-सी धोती से अपने शरीर लपेटे वहाँ बैठी थी।

HSSLiVE.IN

(42) 'मुझे अभी भूख नहीं, तू खा' - माँ ऐसा क्यों कह रही थी?

माँ के पास बच्चे को देने केलिए केवल दो रोटियाँ ही था। इससे बच्चे का पेट भी नहीं भरेगा। अपने बच्चे को खिलाने केलिए माँ ने कहा कि वह आज सबेरे देर से खाई थी, इसलिए अब भूख नहीं लगती।

(43) 'रसीला दुःख' से क्या तातपर्य है?

यशपाल की दुख कहानी में असली दुख की सही पहचान है और नकली दुख पर व्यंग्य प्रहार भी। दिलीप ने बालक के घर में जो करुणामय दृश्य देखा था, वही असली दुख था। उन दोनों को किसी से शिकायत नहीं। भूख में भी अपने बच्चे को रूखी रोटियाँ नमक डालकर खिलाने वाली माँ के मुख में दुख भरी वेदना के साथ वात्सल्य भी है। माँ-बच्चे की करुणा भरी कातरता हमारे हृदय को द्रवित करनेवाला है। लेकिन हेमा का दुख नकली और सांकल्पिक है। हेमा एक संभ्रांत महिला है, जिसने कहा है 'मैं इस जीवन में दुख ही देखने को पैदा हुई हुँ।' वह नहीं जानती है कि असली दुख भयानक है। जीवन में दुख भोगने का अवसर उसको नहीं मिला है। हेमा के दुख को दिलीप रसीला दुख कहा है।

जीवन-वृत्त पढ़े।

नाम	: यशपाल
जन्म	: 3 दिसंबर 1903 , फिरोसपुर छावनी (पंजाब)
रचनाएँ	: उपन्यास – झूठा-सच, दादा कामरेड़, मनुष्य के रूप कहानी - पिंजरे की उड़ान, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध आत्मकथा - सिंहावलोकन
विशेषताएँ	: हिंदी के शीर्षस्थ कहानीकारों में एक : कहानियों का कलात्मक शिल्प
देन	: सामाजिक कुरीतियाँ, शोषण और अंधविश्वास के खिलाफ समाज को सचेत करना
पुरस्कार	: पद्मभूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार
मृत्यु	: 26 दिसंबर 1976

यशपाल के बारे में अनुच्छेद लिखें।

<u>यशपाल</u>

हिंदी के शीर्षस्थ कहानीकार यशपाल जी का जन्म 3 दिसंबर 1903 को पंजाब के फिरोसपुर छावनी में हुआ। सामाजिक कुरीतियाँ, शोषण और अंधविश्वास के खिलाफ समाज को सचेत करना आदि उनके देन है। झूठा-सच, दादा कामरेड़, मनुष्य के रूप, पिंजरे की उड़ान, फूलों का कुर्ता, धर्मयुद्ध आदि उनके रचनाएँ है। सिंहावलोकन उनके आत्मकथा है। वे पद्मभूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि से सम्मानित भी थे। उनकी मृत्यु 26 दिसंबर 1976 को हुई।

HSSLiVE.IN

अनुवर्ती कार्यः-

(1) **'उस ठंडी में भी हमीं दो व्यक्ति बाहर है।'इन दो व्यक्ति कौन-कौन है? दोनो के बाहर रहने के विशेष कारण अपने शब्दों में लिखें।**

ये दो व्यक्ति दिलीप और खोमचेवाले बालक थे।

पत्नी घर छोडकर जाने पर दुखी दिलीप अपने दुख को मिटाने केलिए शाम को टहलने जाता है। रात में साढे नौ बजे तक वह मिंटो पार्क में बैठा। फिर घर लौटने केलिए निकला तो सुनसान सडक पर सर्दी में सिकुडकर बैठनेवाला एक बालक से मिला। अपनी परिवार की गरीबी के कारण आजीविका केलिए ठंडी रात में पकौडे बेचने केलिए निकला था। दोनों के दुख केलिए अलग-अलग कारण थे। बालक का परिवार गरीबी से उत्पन्न अभावग्रस्तता का दुख है तो दिलीप, अपना समझकर भरोसा रखे प्रिय पत्नी से तिरस्कृत होने का है।

(2) **'मैं इस जीवन में दुख ही देखने को पैदा हुई हुँ.....दिलीप ने आगे न पढ़ा, पत्र फाड़कर फेंक दिया'। हेमा का दिलीप के नाम का वह पत्र कल्पना करके लिखें।**

कानपूर
23-4-15

प्रिय दिलीप,

मैं इस जीवन में दुख ही देखने को पैदा हुई हुँ। हमारा जीवन कितना सुंदर था? हमारे खुशी, अब कहाँ है? इस तरह के एक अलगाव, मैं ने कभी भी सोचा।

आपने मुझे पूर्ण स्वतंत्रता दी है। मैं भी एक ईमानदार पत्नी हुँ। लेकिन आपने क्या किया? आप अपने सहेली के साथ सिनेमा देखने चले। मुझे बताए बिना आप क्यों सिनेमा देखने गए? मुझे बाहर लाने केलिए समय नहीं था। यदि मैं अपने मित्र के साथ सिनेमा या अन्य किसी जगह गए तो आप क्या करूँगा? मैं भी उतना ही किया। रूठकर अपने घर आई थी।

अकेले यहाँ आते देखकर माँ ने पूछा। मैं ने कहा आपको अपने दफ़्तर से संबंधित एक यात्रा है। हाँ, अपने घरवालों के आगे आपको छोटी बनाना मैं पसंद नहीं करती। यदि आपको अपनी गलती समझ ली तो मेरे घर आए और मुझे ले जाना। आपकी प्रतीक्षा में...

प्यारी पत्नी
हेमा

पता

(3) ‘मिट्टी के तेल की ढिबरी के प्रकाश में देखा वह दृश्य उनकी आँखों के सामने से न हटता था।’ उस दिन का दिलीप की डायरी लिखें।

- बच्चे से भेंट - माँ की परेशानी - माँ-बेटे का प्यार - असली दुख की पहचान और तुलना।

HSSLiVE.IN

तारीख

मैं क्या लिखूँ। मुझ में शब्द नहीं है। कैसा दृश्य था, वह? कैसे भूलूँ, उसकी आँखों की कातरता?

रात, साढे नौ बजे। मिंटो पार्क से घर जाने केलिए निकला तो रास्ते में एक बालक को देखा। समीप गया। ठंडी हवा में सिकुडकर बैठा था। मुझे देखकर आशा की एक निगाह.....। सारे पकौडे खरीदकर उसका घर देखने की इच्छा से साथ चली। संकरी गली में, एक बडी खिडकी की तरह के दरवाज़ा!धुआ उगलती मिट्टी के तेल की ढिबरी के धुँधला प्रकाश में देखा....एक छोटी-सी चारपाई, दो-एक मैले कपड़े। बेटे की प्रतीक्षा में बैठनेवाली माँ की आँखों की वात्सल्य!बेटे को देखकर उसका मन खिल उठा। सौदा बेचने की खबर सुनते ही वह खुश से खिल उठा। इतनी गरीबी में भी वह स्वाभिमानी थी। किसी से मुफ्त की पैसा लेना नहीं चाहता।

माँ-बेटा का प्यार! अपना भूख भूलकर वह बच्चे को रूखी रोटियाँ, नमक डालकर खिलाती है। पुत्र वात्सल्य की एक अलग छाया मैंने वहाँ देखा। दोनों का प्यार, आपसी समझौता.....मेरा दिल भर गया। इन अभावग्रस्तों की तुलना में मेरा दुख कितना छोटा है? आगे देख सकना संभव न था।

कैसे भूल सकूँगा? उसके मुख में छिपी कातरता........कल ज़रूर उसके घर जाऊँगा। उसे स्कूल भेजने के बारे में कहने केलिए।

एक सुंदर प्रभात की प्रतीक्षा में.........

(4) बच्चे की माँ और दिलीप, दोनों के मुँह से निकलते है- ‘भूख नहीं है’। दोनों के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में इस कथन की विवेचना करके टिप्पणी लिखें।

माँ के पास बच्चे को देने केलिए केवल दो रोटियाँ थी। उसमें नमक डाला है। इससे उस छोटे पेट भी नहीं भरेगा। इसलिए माँ अपना भूख भूलकर बेटे को खिलाया। बेटे तो घर की हालत पहचानकर एक रोटी माँ को दिया तो, माँ ने कहा कि उसको भूख नहीं है।

यह सब देखकर दिलीप का मन द्रवित हो गया। माँ-बेटे के प्यार एवं समझौता भरी असली दुख को देखकर घर वापस आए तो नौकर उसे खाने केलिए बुलाया तो उसने कहा- ‘भूख नहीं है’। इन अभावग्रस्त माँ-बेटे के दुख के सामने उसका दुख इतना छोटा और नकल है, यह समझकर दिलीप ने ऐसा कहा।

अभाव में भी माँ-बेटे के बीच प्यार भरी वात्सल्य है, लेकिन एक संभ्रांत परिवार के सदस्य होकर भी हेमा और दिलीप के दुख में कृत्रिमता और स्वार्थता है।

<u>परीक्षा केंद्रित कुछ और प्रश्न। इनके उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें</u>:-

(1) दिलीप हेमा की सहेली के साथ सिनेमा देखने गया तो हेमा नाराज़ होती है। इस विषय में दोनों के बीच का संभाविक वार्तालाप लिखें।

(2) अपनी निराशा यह डायरी में लिखता है। हेमा की ड़ायरी का वह पन्ना कल्पना करके लिखें।

(3) अपने पति दिलीप, अपनी सहेली के साथ सिनेमा देखने गया। इसमें रूठी होकर हेमा अपनी सहेली को टेलिफोन करते है। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

हेमा :मैं ने कुछ देर से बुलाते हैं।

सीना :मैं ने नहीं सुना।

HSSLiVE.IN

....

(4) रात भर रूठी रह कर सुबह उठते ही हेमा अपने घर चली गई। घर में अपनी माँ से हेमा सारी घटनाएँ बताते हैं। हेमा और माँ के बीच के संभावित वार्तालाप लिखें।

माँ :अरे हेमा, क्यों अकेली आए?

हेमा :आगे अकेली है।

(5) अपनी पुत्री, पति के घर छोड़कर आने के संबंध में हेमा के माता-पिता के बीच का वार्तालाप लिखें।

(6) हेमा अपने घर जाने के बाद दिलीप उदासीन होकर घर में अकेला बैठता है। उस समय उसके छोटा भाई वहाँ आता है। उन दोनों के बीच का संभावित वार्तालाप लिखें।

(7) दिलीप और खोमचे बेचनेवाले लड़के के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

दिलीप :क्यों इतनी सर्दी में अकेले बैठे है?

बच्चा :ज़रा देखिए, इन पकौड़े बेचने केलिए।

....

(8) बाकी लेने केलिए दिलीप लड़के के साथ गया। रास्ते में दिलीप उनसे घरवालों के बारे में पूछता है। वह वार्तालाप लिखें।

दिलीप :तेरा बाप क्या करता है?

बच्चा :बाप मर गया है।

....

(9) खोमचे बेचकर घर लौटने पर माँ उनसे बिक्री के बारे में पूछते हैं। उन दोनों के बीच का संभावित वार्तालाप लिखें।

माँ :सौदा बिक गया, बेटा?

बेटा :हाँ, माँ।

....

(10) लड़के की माँ और दिलीप के बीच में संभावित वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

माँ :जी, रुपये के पैसे नहीं है।

दिलीप :तो रहने दो रूपया।

....

(11) लड़के की घर की हालत देखकर दुःखी दिलीप अपने उस दिन की ड़ायरी में क्या लिखा होगा। कल्पना करके लिखे।

(12) माँ ने बेटा को खाने केलिए रूखी रोटी दिया। बेटा को वह पसंद नहीं आया। उस समय माँ और बेटा के बीच का संभावित वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

बेटा :ऊँ-ऊँ रूखी रोटी!

माँ :नमक ड़ाला है, बेटा।

HSSLiVE.IN

....

(13) घर पहुँचते ही दिलीप को हेमा की चिट्ठी मिली, जिसके पहली पंक्ति यों है- "मैं इस जीवन में दुःख ही देखने को पैदा हुई है।" दिलीप पत्र के जवाब लिखने की तैयारी में है। वह उस बालक के असली दुःख के बारे में भी जिक्र करना चाहता है। दिलीप का वह पत्र लिखें।

(14) उस बालक के प्रति जो सहानुभूति है, वह उसे स्कूल में भेजाकर पढ़ाने का निश्चय किया। इसके बारे में कहने केलिए वह फिर उसके घर पहुँचता है। दिलीप और लड़के के माँ के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

(15) दुःख शीर्षक की सार्थकता पर अपना विचार प्रकट करें।

||||||||||||||||||||

DO NOT COPY

HSSLiVE.IN